तीसरा दिन भी निकल आया । मारे भूख के उसकी आँखों में तितलियाँ-सी उड़ने लगीं । डाल पर बैठना भी उसे मुश्किल मालूम होता था । कभी-कभी तो उसके जी में आता कि शेर मुझे पकड़ ले और खा जाए । उसने हाथ जोड़कर ईश्वर से विनय की , भगवान , क्या तुम मुझ गरीब पर दया न करोगे शेर को भी थकावट मालूम हो रही थी । बैठे-बैठे उसका जी ऊब गया । वह चाहता था किसी तरह जल्दी से शिकार मिल जाए । लड़के ने इधर-उधर बहुत निगाह दौड़ाई कि कोई नज़र आ जाए , मगर कोई नजर न आया । तब वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा । मगर वहाँ उसका रोना कौन सुनता था । आखिर उसे एक तदबीर सूझी । वह पेड़ की फुनगी पर चढ़ गया और अपनी धोती खोलकर उसे हवा में उड़ाने लगा कि शायद किसी शिकारी की नजर पड़ जाए । एकाएक वह खुशी से उछल पड़ा ।